दोस्ती की ट्रेन

जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे भारत को बुलेट ट्रेन की सौगात देने आए हैं। हालांकि उनका दौरा इस प्रॉजेक्ट तक ही सीमित नहीं है। भारत और जापान का रिश्ता बड़ी तेजी से एक नए मुकाम की ओर बढ़ रहा है। मोदी और आबे दोनों देशों के बीच जारी बहुस्तरीय सहयोग की समीक्षा करेंगे और भविष्य में इसे और बढ़ाने पर बात करेंगे। दोनों प्रधानमंत्रियों की मुलाकात में परमाणु ऊर्जा, रक्षा उपकरणों की खरीद-फरोख्त और भारत के बुनियादी ढांचे के सुधार में जापान के सहयोग का मुद्दा छाया रहेगा। पिछले कुछ समय में भारत-जापान मैत्री आर्थिक और सामरिक दोनों मोर्चों पर प्रगाढ़ हुई है। डोकलाम सीमा पर भारत और चीन के बीच चली तनातनी के दौरान भारत, जापान और अमेरिका ने साथ मिल कर सैन्य अभ्यास किया। जुलाई में भारत-जापान असैन्य परमाणु समझौता भी लागू हो गया, जिसके तहत जापान भारत में छह नए एटमी ऊर्जा संयंत्र लगाएगा। पिछले डेढ़ दशकों में भारत के विकास में जापानी निवेश ने अहम भूमिका निभाई है। जापान की मदद से देश में कई परियोजनाएं चल रही हैं और कई प्रस्तावित हैं। भारत और जापान 'एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (एएजेसी)' पर काफी जोर-शोर से काम कर रहे हैं। आबे और मोदी की मुलाकात से इस प्रॉजेक्ट को रफ्तार मिलने की उम्मीद है। इस वृहद परियोजना में ईरान के चाहबहार बंदरगाह को विकसित करना भी शामिल है, जिसके जरिए अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों तक भारत की पहुंच आसान हो जाएगी। यह एक तरह से चीन के 'वन बेल्ट वन रोड' प्रॉजेक्ट का जवाब भी होगा। एशिया में चीन की बढ़ती आक्रामकता को ध्यान में रखते हुए जापान और भारत, दोनों को अभी एक दूसरे की जरूरत है। जहां तक बुलेट ट्रेन प्रॉजेक्ट का प्रश्न है तो इसका मकसद अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के जरिए यात्रियों को तेज यात्रा का एक विकल्प उपलब्ध कराना और देश की इकॉनमी को रफ्तार देना है। लेकिन इसे लेकर एक तरफ देश में उत्साह है तो दूसरी तरफ कई सवाल भी हैं। कहा जा रहा है कि जापान द्वारा इसके लिए बहुत आसान शर्तों पर और बहुत कम ब्याज पर कर्ज दिया जा रहा है। लेकिन यह कर्ज डॉलर में दिया जाएगा, तो डॉलर के मुकाबले रुपये की गिरावट का रुझान देखते हुए कहीं हम अपने ऊपर कर्ज का बहुत ज्यादा बोझ तो नहीं लेने जा रहे हैं? एक आशंका यह भी है कि खर्च की एक अलग मद सामने आ जाने के कारण कहीं संकटग्रस्त भारतीय रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर की समस्याएं और न बढ़ जाएं? लोग चाहते हैं कि बुलेट ट्रेन तो आए, लेकिन मौजूदा रेलवे ढांचे में यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्राथमिकता में कोई ढील न आने पाए। सरकार को इन आशंकाओं का निराकरण करना चाहिए।

सब कुछ गायब

जैसे शोहरत गायब हुई, वैसे ही हनीप्रीत भी गायब हो गयी। बाबा उसे पुकार रहा है, पर वह नहीं मिल रही। हो सकता है बाबा उन नेताओं को भी पुकार रहा हो, जो कल तक उसके चरणों में पड़े रहते थे, पर वे भी गायब हैं। किसी को पता है साक्षी महाराज कहां हैं? जी वही, जो कोर्ट को सीख दे रहे थे कि बाबा के करोड़ों भक्त हैं, उनकी भावनाओं को समझो। वे करोड़ों भक्त कहां हैं? सब माया की तरह गायब हो गए। हरियाणा के वे मंत्री भी गायब हो गए जो डेरे को पचास-पचास लाख रुपए अनुदान दे रहे थे। वे तो भक्ति दिखा रहे थे। अपना पैसा थोड़े दे रहे थे, सरकार का दे रहे थे। और सरकार तो राम-नाम की तरह से है-लूट सके तो लूट या फिर लुटा सके तो लुटा। सरकार के पैसे से भक्ति दिखाने का मौका तो सरकार में रहकर ही आ सकता है। देख भक्ति गायब, शक्ति गायब, सब माया है,अब तो समझ गया ना? बच्चा!!

चमकते कंगूरों तले भूख के सवाल

पता नहीं सन् 2022 का न्यू इण्डिया कैसा होगा, पर सन् 2017 का 'भारत' भूख और ग़रीबी दोनों से लड़ रहा है। नयी नहीं है यह लड़ाई। पिछले सत्तर साल से हम यह लड़ाई लगातार लड़ रहे हैं। इस लड़ाई के कई मोर्चों पर हम जीते भी हैं, लेकिन हकीकत यह भी है कि अक्सर यह लड़ाई राजनीति के दांव-पेच का हथियार बनती रही है।

लगभग आधी सदी पहले हमारे नेताओं ने गरीबी हटाओ का नारा दिया था। तभी यह भी कहा गया था कि वह दिन जल्दी आयेगा, जब देश में कोई भूखा नहीं सोयेगा। तब से लेकर अब तक बहुत सारी सरकारें बनी देश में, अलग-अलग पार्टियों के सिपहसालारों ने अपनी कोशिश को निर्णायक घोषित करते हुए भूख को मिटाने के दावे किये। दावों से ज़्यादा वादे किये गये। नारों से भरमाने की कोशिशें भी कम नहीं हुई। पर इस सारी कवायद का नतीजा कुल मिलाकर यह निकला है कि भूख और कुपोषण के मोर्चे पर हम आज भी हारते ही दिख रहे हैं।

इसका सही प्रमाण वे करोड़ों भारतीय चेहरे हैं, जो भूख से मुरझाये दिखते हैं। लेकिन हमारी एक हकीकत यह भी है कि भूख का यह मुद्दा अक्सर विकास के अन्यान्य दावों की भीड़ में खो जाता है। पर यह चेहरा अपनी पूरी विद्रूपता के साथ प्रगति के हमारे दावों को अंगूठा दिखा रहा है। एक अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान है वाशिंगटन में। लगभग साल भर पहले इस संस्थान ने वैश्विक भूख सूचकांक जारी किया था। यह सूचकांक आबादी के अनुसार भूख और कुपोषण के संदर्भ में अलग-अलग देशों का स्थान निर्धारित करता है।

इस सूचकांक के अनुसार दुनिया के 118 विकासशील देशों की सूची में हमारा स्थान 97वां है। साल भर पहले जब यह सर्वेक्षण प्रकाशित हुआ था तो कुछ चर्चा हुई थी इस बारे में। पर वह चर्चा पानी के बुलबुलों की तरह उठी और मिट गयी। मिट गयी के बजाय मिटा दी गयी कहना बेहतर होगा। इस तरह के परेशान करने वाले आंकड़े किसी भी सरकार को रास नहीं आते। वह अक्सर नज़रअंदाज़ कर देती है ऐसी बातों को? ध्यान बंटा दिया जाता है ऐसी बातों से जनता का।

काला धन, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसे बड़े-बड़े मुद्दे परोस दिये जाते हैं। बिना यह बताये कि अच्छे दिन क्या होते हैं, अच्छे दिनों के सपने दिखा दिये जाते हैं। सरकारें यह मानती हैं कि जनता की याददाश्त कमज़ोर होती है। और सरकारें यह भी मानती हैं कि नये-नये नारों से जनता को भरमाया जा सकता है। इतना भरमाया जा सकता है कि वह भूख भी भूल जाये! शायद इसीलिए हम यह भी भूल गये हैं कि ग्यारह साल पहले, सन् 2006 में, जब पहली बार वैश्विक भूख सूचकांक जारी किया गया था तो 119 देशों की सूची में हमारा स्थान 96वां था। आज 97वां है। अर्थात हालात और बिगड़े हैं।

पाकिस्तान को छोड़कर शेष सभी पड़ोसी देशों की तुलना में हमारा स्थान नीचा है। सन् 2006 और 2017 के ये आंकड़े स्पष्ट बता रहे हैं कि आज भले ही हम सौ से ज़्यादा उपग्रह एक साथ छोड़ने की स्थिति में आ गये हैं, मंगल तक हमारी पहुंच हो गयी हो, जापान की तरह बुलेट ट्रेन चलाने की तैयारियां कर रहे हैं पर भूख और कुपोषण के मामले में हम वहीं खड़े हैं, जहां ग्यारह साल पहले थे। वाशिंगटन का संस्थान तो सात समुद्र पार से हमारी भूख को देख रहा है, हमारा अपना राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो राजधानी दिल्ली में बैठा हमारी भूख की नाप-तोल कर रहा है।

यह बात आसानी से नहीं पचेगी कि हमारे इस ब्यूरो के सर्वेक्षण के अनुसार, इण्डिया का पेट भले ही भरा लग रहा हो, भारत यानी देश का सत्तर प्रतिशत ग्रामीण इलाका चालीस साल पहले की तुलना में कम खाता है। ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार 1975-79 की तुलना में अब हमारा ग्रामीण भारतीय 550 केलोरी कम पाता है। तीन से कम वर्ष आयु के बच्चे को रोजाना जितने दूध की आवश्यकता होती है, उसका एक-चौथाई ही उसे मिल पाता है।

मीडिया में आयी जानकारी के अनुसार इसी सर्वेक्षण में राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो ने यह भी पाया है कि ग्रामीण भारत के 35 प्रतिशत लोग अल्प पोषण के शिकार हैं और लगभग आधे बच्चों का वजन उससे कम है, जितना होना चाहिए था। यह सही है कि सरकार कभी-कभी इस कुपोषण की बात करती है। प्रधानमंत्री ने 2022 के जिस न्यू इण्डिया की बात कही है, उसमें भूख और कुपोषण के खात्मे का वादा भी किया गया है। लेकिन भूख मिटाने का यह लक्ष्य शायद प्रधानमंत्री की सूची में सबसे अंत में आता है। तभी तो यह रेखांकित किया जाता नहीं दिखता। दरअसल, भूख और कुपोषण के खिलाफ लड़ाई का ऐलान पहले भी होता रहा है। इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ के नारे के बल पर चुनाव जीता था। फिर जब भाजपा की सरकार आयी तो प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देश की जनता को आश्वासन दिया था कि उड़ीसा के कालाहांडी क्षेत्र को भूख से मुक्ति दिलाएंगे। पिछली सरकार के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने तो कुपोषण को 'राष्ट्रीय शर्म' कहकर इससे उबरने का आह्वान किया था। यह इन तीनों प्रधानमंत्रियों के कहने और करने के अंतर का ही परिणाम है कि भूख और कुपोषण की समस्या देश में लगातार विकराल होती जा रही है। भूखा और कुपोषित भारत विकास के दावे करने वाले इण्डिया को मुंह चिढ़ा रहा है। विकास के नये-नये दावे रोज़ हो जाते हैं, नयी परिभाषाएं गढ़ी जा रही हैं विकास की। उसी के अनुसार प्राथमिकताएं तय होती हैं। अंग्रेजी में एक मुहावरा है-गोलपोस्ट चेंज करने का। इसका मतलब होता है सुविधा के अनुसार लक्ष्य ही बदल देने का। इस प्रवृत्ति के शिकार होते जा रहे हैं हम। इसी का परिणाम है कि भूख जैसी समस्या हमें 'अपने आप सुलझ जायेगी' जैसी लगने लगी है। शायद इसीलिए राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो को भी भंग कर दिया गया है! इस ब्यूरो का गठन 1972 में किया गया था और यह हर दस वर्ष पर अपने सर्वेक्षण के नतीजे प्रसारित करता था। लेकिन 2015 में इसे अचानक भंग करने का निर्णय सरकार ने ले लिया। कारण कुछ भी रहे हों, पर परिणाम यह हुआ है कि अब हमें पता ही नहीं चल पायेगा कि देश कितना भूखा है, कितना कुपोषित है। सच तो यह है कि भूख और कुपोषण की इस समस्या को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जा रहा, जितनी गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इण्डिया का विकास और भारत का विकास एक ही तराजू पर न तोलने का परिणाम है कि आज कुपोषण के मामले में हमारा विकास चीन से नौ गुना कम है और ब्राजील से तेरह गुना। हमें इस बात की चिंता नहीं है कि भूमिहीन ग्रामीणों का प्रतिशत तीस से चालीस क्यों हो गया? अर्थव्यवस्था में सुधार के बावजूद ग्रामीण भारत का पेट क्यों नहीं भर पा रहा? कहीं न कहीं सोच में बुनियादी गड़बड़ी है और त्रासदी यह है कि इस गड़बड़ी के बारे में सोचने की आवश्यकता ही महसूस नहीं की जा रही। विकास के लुभावने नारों और चमकते कंगूरों से भरमाया जा रहा है हमें जबकि ज़रूरत बुनियाद मज़बूत करने की है।

और आसान तलाक

मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने एक अहम फैसले में कहा कि हिंदू कपल अगर तलाक लेने पर एकमत हैं और उनके बीच दोबारा मेलजोल की संभावनाएं समाप्त हो चुकी हैं तो फिर उन्हें तलाक के लिए छह महीने इंतजार कराना जरूरी नहीं है। अगर वे एक साल पहले से अलग रह रहे हों और गुजारा भत्ता, बच्चों की देखभाल जैसे सवालों पर उनमें सहमति बन चुकी हो तो एक हफ्ते में भी उनका तलाक मंजूर किया जा सकता है। गौरतलब है कि हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13बी (2) में शादीशुदा जोड़े की तलाक की अर्जी मंजूर करने से पहले उसे कम से कम छह महीने और अधिक से अधिक 18 महीने का वक्त देने की बात कही गई है। इस प्रावधान का मकसद यह था कि इतना बड़ा फैसला कहीं हड़बड़ी में या तात्कालिक आवेश में आकर न हो जाए। यह एक वाजिब चिंता है। विवाह संस्था किसी भी समाज की बुनियाद हुआ करती है। लेकिन इस बुनियाद में घुटन और जोर-जबर्दस्ती का कीड़ा नहीं लगा होना चाहिए। किसी विवाह की अगर शक्ल बिगड़ चुकी हो, इसके संवरने की कोई संभावना भी न हो, तो फिर ऐसी स्थिति में पति-पत्नी को अलग होकर अपने लिए नया रास्ता चुनने का मौका देने में ही बुद्धिमानी है। सुप्रीम कोर्ट के इस महत्वपूर्ण फैसले में इस तथ्य को समझते हुए विवाहित हिंदुओं के तलाक की प्रक्रिया को आसान बनाया गया है। यह रेखांकित करना जरूरी है कि इस्लाम ने भले ही तलाक को एक समझौता टूटने के रूप में मान्यता दी हो, पर हिंदू धर्म में तलाक के लिए कोई जगह नहीं थी। यहां तो शादी को जन्म-जन्मांतर का बंधन ही माना गया है। इसके बावजूद स्वतंत्र भारत की पहली संसद ने एक क्रांतिकारी पहलकदमी लेते हुए हिंदू विवाह अधिनियम में तलाक की वैधानिक प्रक्रिया तय की और तब से अब तक न्यायपालिका के हस्तक्षेप से यह लगातार पहले से ज्यादा आसान होता गया। सबसे बड़ी बात यह कि हिंदू समाज में इस मूलगामी बदलाव के खिलाफ कभी कोई बड़ा आक्रोश या असंतोष देखने को नहीं मिला। यह देश के बहुसंख्यक समाज की उदारता और खुलेपन का प्रमाण है। अच्छा होगा कि लोग भी विवाह संबंध को लेकर और ज्यादा सहज दृष्टिकोण अपनाएं।

एसवाईएल पर गतिरोध

तीन दशक से अधिक का समय गुजर चुका है लेकिन कृषि प्रधान दो पड़ोसी राज्यों पंजाब एवं हरियाणा के बीच एसवाईएल नहर को लेकर आज भी टकराव निरंतर बना हुआ है। 1982 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने हरियाणा की कृषि भूमि की प्यास बुझाने के इरादे से नहर का निर्माण शुरू करवाया था। नहर बनकर तैयार भी हो गई लेकिन पंजाब द्वारा अपने लिए ही पानी कम होने की दलील देते हुए हरियाणा को एक भी बूंद पानी देने से इनकार कर दिया गया। इसके चलते लाखों रुपये खर्च कर बनाई गई नहर और हरियाणा के खेत आज भी प्यासे हैं। इस मुद्दे पर दोनों पड़ोसी राज्यों के बीच कई बार टकराव पैदा हुआ, मामला अदालतों तक जा पहुंचा, लेकिन फिर भी स्थिति जस की तस बनी हुई है। पानी का बंटवारा पंजाब एवं हरियाणा ही नहीं, देश के कई अन्य राज्यों के बीच भी विवाद एवं टकराव का मुद्दा रहा है लेकिन विभिन्न केंद्रीय सरकारों की पहल के बावजूद इस मसले का कोई सर्व स्वीकार्य हल संभव नहीं हो पाया है। इस संबंध में अटार्नी जनरल केके वेणुगोपाल के 'आशावाद' की वजह को तत्काल जान पाना तथा इस बारे में कुछ कह पाना तो मुश्किल है; लेकिन फिर भी ऐसा कोई भी 'पूर्वानुमान' स्वागतयोग्य है क्योंकि इससे अरसे से लंबित इस मुद्दे के राजनीतिक समाधान के प्रति सरकार की वचनबद्धता का संकेत तो मिलता ही है।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. याद, स्मरण 3. अग्नि, आग, पवित्र करने वाला 6. गौ जाति का नर 8. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 10. मुस्कुराहट, तबस्सुम 11. खारा, नमक के स्वाद जैसा 14. मुख्यभाग, निचोड़ 16. पिंडली व एड़ी के बीच की दोनों ओर उभरी हड्डी, गुल्फ 18. अद्भूत, विचित्र 21. सम्राट, बादशाह, नरेश 22. कृति, निर्माण करना, बनाना 23. बड़ी थाली 24. समूह, दल 26. एहसानमंद, कृतज्ञ 27. ध्वनि, सदा 28. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर।

ऊपर से नीचे

2. अपमान, अनादर, अवज्ञा 3. जल, नीर, अम्बु 4. वाणी, वादा, कथन 4. कर्म शब्द का अपभ्रंश, भाग्य 7. लकड़ी का घूमने वाला एक गोल खिलौना, बिजली का बल्ब 9. लोग, प्रजा 10. यात्री, राही, पथिक 12. कीड़ा 13. चोचला, अदा 15. दंड 17. अवैध, अनुचित 18. जो आधिकारिक न हो, जो अधिकार प्राप्त न हो 19. जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, सत्यपरक, वाजिब 20. ताकत, शक्ति 24. प्रश्न, समस्या 25. घटना, घटना का वर्णन 26. एक प्रसिद्ध पक्षी जो रात में विचरण करता है, लक्ष्मीजी की सवारी 27. पानी, चमक।

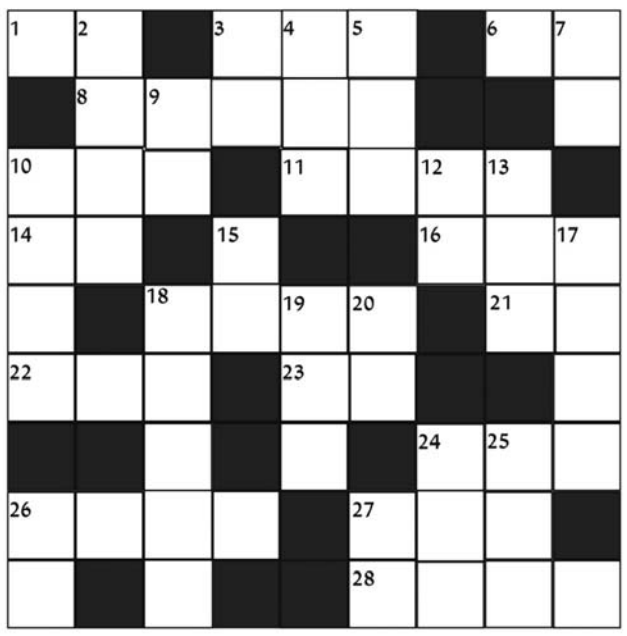

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 73 का हल

टे	ढ़ा	मे	ढ़ा	■	म	हा	र	त
क	■	ह	■	■	■	■	ज	न
■	जा	न	की	■	क	म	नी	य
■	■	त	म	क	ना	■	■	■
म	■	■	त	ह	त	■	दा	ब
सी	मा	■	■	ला	■	स	न	द
हा	थ	म	ल	ना	■	वा	■	च
■	■	द	■	■	घा	ल	मे	ल
■	ब	द	ह	वा	स	■	■	न

सू-दोकू

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.73 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

राशिफल

मेष- कार्यक्षेत्र में आपके पक्ष में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। इससे व्यथित होकर सहकर्मियों का मूड कुछ खराब हो सकता है। किंतु आप अपने व्यवहार से माहौल को सामान्य बनाने में कामयाब रहेंगे।

वृष- आज दोपहर तक हर्षवर्धक शुभ समाचार मिल सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। किसी मांगलिक कार्य में सम्मिलित होने से आपका सम्मान बढ़ेगा।

मिथुन- पिता के आशीर्वाद तथा वरिष्ठ अधिकारियों की कृपा से किसी बहुमूल्य वस्तु अथवा संपत्ति की प्राप्ति की अभिलाषा आज पूरी होगी।

कर्क- आज बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति हो सकती है। व्यावसायिक योजनाओं को गति मिलेगी। राज्य मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। शीघ्रता व भावुकता में लिया गया निर्णय आगे चलकर पश्चाताप का कारण बन सकता है। भगवान के दर्शन करें।

सिंह- आज रुका हुआ कार्य सम्पन्न हो सकता है। प्रयास तेज कर दें। खान-पान का विशेष ध्यान रखें। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

कन्या- आज कर्मोद्योग में तत्परता से लाभ होगा। स्वजनों से सुख, पारिवारिक मंगल कार्यों की खुशी होगी। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर क्रोध पर काबू रखें।

तुला- आय के नए स्रोत बनेंगे। वाक्पटुता आपको विशेष सम्मान दिलाएगी। भागदौड़ विशेष रहने के कारण मौसम का विपरीत प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ सकता है, सावधान रहें।

वृश्चिक- आज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होकर धन, सम्मान, यश, कीर्ति की वृद्धि होगी। रुका हुआ कार्य सिद्ध होगा। वाणी पर संयम न रखने से विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है।

धनु- आज गृहोपयोगी वस्तुओं पर धन का खर्च होगा। सांसारिक सुख भोग के साधनों में वृद्धि होगी। आधीनस्थ कर्मचारी या किसी संबंधी के कारण तनाव बढ़ सकता है।

मकर- आज व्यवसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने से हर्ष होगा। आर्थिक स्थिति पूर्वापेक्षा अधिक सुदृढ़ होगी। व्यवसाय परिवर्तन की योजना बन रही है। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें।

कुंभ- अकस्मात् शारीरिक कष्ट होने से भागदौड़ व अधिक खर्चे की स्थिति आ सकती है। किसी संपत्ति के क्रय-विक्रय के समय उसके पूर्व संपत्ति के सारे वैधानिक पहलुओं पर गंभीरता से विचार कर लें।

मीन- बिजनस में बढ़त से काफी खुशी होगी। विद्यार्थियों को मानसिक बौद्धिक भार से छुटकारा मिलेगा। सांयकाल के समय घूमने फिरने के दौरान कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।